CW 22/3/...

प्रश्न अभ्यास

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उ- पहले पद में मीरा कहती हैं कि जिस प्रकार हे। प्रभु आप अपने सभी भक्तों के दुखों को हरते हो जैसे - द्रौपदी की लाज बचाने के लिए साड़ी का कपड़ा बढ़ाते चले गए। प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप धारण कर लिया और ऐरावत हाथी को बचाने के लिए मगरमच्छ को मार दिया। उसी प्रकार मेरे भी सारे दुखों को हर लो अर्थात सभी दुखों को समाप्त कर दो।

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है? स्पष्ट कीजिए।

उ- दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण की नौकर बनने की विनती इसलिए करती है क्योंकि वह श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका खोना नहीं चाहती हैं। वह कहती है कि मैं बगीचा लगाऊँगी ताकि रोज सुबह उठते ही मुझे श्री कृष्ण के दर्शन हो सके।

3. मीरा ने श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उ- मीरा श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती है कि उन्होंने शीश पर मोर पंख का मुकुट धारण किया हुआ है, पीले वस्त्र पहने हुए है और गले में वैजयंती फूलों की माला को धारण किया हुआ है। मीरा कहती है कि जब श्री कृष्ण वृंदावन में गाय चराते हुए बांसुरी बजाते है तो सब का मन मोह लेते है।

4. मीरा की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उ- मीरा को हिंदी और गुजराती दोनों की कवयित्री माना जाता है। इनकी कुल सात-आठ कृतियाँ ही उपलब्ध है। मीरा की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। इसमें राजस्थानी, पुनरुक्ति, रूपक आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया है

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कवयित्री मीरा ने अपने प्रभु से क्या प्रार्थना की है? प्रथम पद के आधार पर लिखिए।

उ- कवयित्री मीरा ने अपने प्रभु श्रीकृष्ण से लोगों की पीड़ा दूर करने की प्रार्थना की है । उनके प्रभु श्रीकृष्ण ने द्रौपदी, प्रह्लाद और गजराज की जिस तरह सहायता की थी और उन्हें विपदा से मुक्ति दिलाई उसी तरह मीरा अपनी पीड़ा दूर करने की प्रार्थना अपने प्रभु से की है ।

2. 'चाकर राखो जी' के माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती हैं ? उसकी यह मनोकामना कैसे पूरी हुई ?

उ- कवयित्री मीरा अपने प्रभु श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थी । वह श्रीकृष्ण की चाकरी करके उनका सामीप्य पाना चाहती थी । इस चाकरी से उन्हें अपने प्रभु के दर्शन मिल जाने । उनका नाम स्मरण करने से स्मरण रूपी जेब खर्च मिल जाता और भक्ति रूपी जागीर उन्हें मिल जाती । उन्होंने अपनी इस मनोकामना की पूर्ति कृष्ण की अनन्य और भक्ति के माध्यम से पूरी की ।

3. मीरा अपने आराध्य श्रीकृष्ण का दर्शन और सामीप्य पाने के लिए क्या-क्या उपाय करती हैं ?

उ- कवयित्री मीरा अपने प्रभु की भक्ति में डूबकर उनका सामीप्य और दर्शन पाना चाहती है ।

इसके लिए वे चाहती हैं कि श्रीकृष्ण उन्हें अपनी चाकरी में रख लें। मीरा बाग लगाना चाहती हैं ताकि श्रीकृष्ण वहाँ घूमने आएँ और उन्हें दर्शन मिल सके। वे श्रीकृष्ण का गुणगान ब्रज की गलियों में करती हुई घूमना-फिरना चाहती हैं। मीरा विशाल भवन में भी बगीचा बनाना चाहती हैं ताकि उस बगीचे में घूमते श्रीकृष्ण के दर्शन कर सकें। वे श्रीकृष्ण का सामीप्य पाने के लिए लाल रंग की साड़ी पहनती हैं और अपने प्रभु से प्रार्थना ~~सा सामीप्य पाने के लिए~~ करती हैं कि वे आधी रात में यमुना के किनारे मिलने की कृपा करें क्योंकि इस मिलन के लिए के लिए उनका मन बेचैन हो रहा है।

प. वे श्री कृष्ण को पाने के लिया क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उ- मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए अनेक कार्य करने के लिए तैयार हैं- वे कृष्ण की सेविका बन कर रहने को तैयार हैं, वे उनके विचरण अर्थात घूमने के लिए बाग बगीचा लगाने के लिए तैयार हैं। ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनाना चाहती हैं ताकि श्री कृष्ण के दर्शन कर सकें और यहाँ तक की आधी रात को यमुना नदी के किनारे लाल रंग की साड़ी पहन कर दर्शन करने के लिए तैयार हैं।

(ख) निम्नलिखित पंक्ति का काव्य - सौन्दर्य स्पष्ट कीजि

1. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रौपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप शरीर।

उ- इन पंक्तियों में मीरा श्री कृष्ण के भक्ति-भाव को प्रकट कर रही है। इन पंक्तियों में शांत रस प्रधान है। मीरा कहती है कि हे! श्री कृष्ण आप अपने भक्तों के कष्टों को हरने वाले हो। आपने द्रौपदी की लाज बचाई और साडी के कपड़े को बढ़ाते चले गए। आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप भी धारण किया।

2. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीरां लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

उ- इन पंक्तियों में मीरा श्री कृष्ण से उनके दुःख दूर करने की विनती करती है। इन पंक्तियों में तत्सम और तद्भव शब्दों का सुन्दर मिश्रण है। मीरा कहती है कि जिस तरह श्री कृष्ण अपने हाथियों के राजा ऐरावत को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था मुझे भी हर दुःख से बचाओ।

8. चाकरी में दरशन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची। भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बातां सरसी।

उ- इन पंक्तियों में मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भाव भक्ति दर्शा रही हैं। यहां शांत रस प्रधान है। यहां मीरा श्री कृष्ण के पास रहने के तीन फायदे बताती हैं। पहला - उन्हें रोजाना दर्शन प्राप्त होंगे। दूसरा - उन्हें श्री कृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी और तीसरा - उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जाएगा।